UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 11, अंक : 1, मई 2023

गुरु तेग बहादुर वाणी : दार्शनिक और सांगीतिक परिप्रेक्ष्य

बलविंदर सिंह

शोधार्थी, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

सार-संक्षेप

नौवें सिक्ख गुरु तेग बहादुर जी की विचारधारा बहुत विशाल और विश्व-व्यापक थी। अपने धर्म की रक्षा के लिए तो बहुत लोगों ने शहादत दी है परन्तु किसी दूसरे धर्म की रक्षा के लिए आप द्वारा दिया बलिदान बेमिसाल है। संसार में बहुत पीर, पैगम्बर और धार्मिक पुरुष हुए हैं जो सिर्फ अपने दायरे तक ही सीमित रहे पर गुरु साहिब ने जन कल्याण हित कई यात्राएँ की और गुरुवाणी की रचना करने के साथ-साथ गुरमति संगीत के माध्यम से गुरुवाणी का संसार भर में प्रचार किया। इस शोध-पत्र के द्वारा गुरु तेग बहादुर जी के दार्शनिक और सांगीतिक परिप्रेक्ष्य को उभारने का प्रयत्न किया गया है। सांगीतिक परिप्रेक्ष्य के अधीन गुरु साहिब द्वारा प्रयोग किए गए मुख्य राग और उपरागों की संख्या, रागों में उच्चारण किए शब्दों की संख्या और वाणी में मानवता को दिए गए संदेश के बारे में संक्षिप्त चर्चा की गई है। गुरुवाणी भक्ति मार्ग के साथ-साथ ज्ञान और कर्म की भी समर्थक है। आप ने वाणी की रचना रागबद्ध ढंग से की और सरल भाषा का प्रयोग किया। आप बताते हैं कि मनुष्य जन्म दुर्लभ और अमूल्य है। इस को व्यर्थ में बर्बाद करना धर्म नहीं है। किसी भी प्रकार के लोभ, मोह से ऊपर उठ कर जीवन को सेवा में लगा देना ही असली धर्म है। इस शोध-पत्र में मुख्य रूप से श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज शब्दों के ही हवाले दिए गए हैं जिससे गुरुवाणी के मूल भाव को जन साधारण भी आसानी से समझ सके।

मुख्य शब्द : गुरु ग्रंथ साहिब, गुरु तेग बहादुर, राग, गुरु वाणी, गुरु नानक

शोध-पत्र

गुरु तेग बहादुर जी ने जहाँ जीवन के अज्ञान और अंधकार को मिटा कर मानवीय समाज को नई रोशनी दी, वहीं कला और संस्कृति के रूप में काव्य और संगीत को एकसुरता प्रदान की जिस के प्रत्यक्ष दर्शन श्री गुरु ग्रंथ साहिब की वाणी के राग-प्रबंध से किए जा सकते हैं। गायन के शुद्ध स्वरूप का गुरु साहिबान ने इस हद तक ध्यान रखा है कि–''अक्षर लिखे सेई गावा अवर न जाणा बाणी।।''[1] गुरमति संगीत में शबद की प्रधानता है और इस परम्परा में पहला स्थान शबद और दूसरा स्थान राग-ताल को दिया जाता है। ''गुरमति संगीत शताब्दियों पुरातन सिख धर्म की अद्वितीय संगीत परम्परा है, जिसे गुरु नानक देव जी से लेकर समस्त गुरु साहिबान ने मर्यादित स्वरूप में प्रचारित किया।''[2] संगीत गुरु नानक के जीवन का प्रमुख अंग रहा तथा आप ने समाज को संगीत एवं संकीर्तनों के माध्यम से मानवता का पाठ पढ़ाया।[3]

गुरु तेग बहादुर साहिब ने वाणी में संसार की नश्वर सच्चाई को बयान किया है। माया के मोह में फँसा हुआ मानव मौत को भूल जाता है। ''इकि बिनसै इक असथिरू मानै अचरजु लखिओ न जाई।।''[4] अर्थात एक मानव मरता है परन्तु दूसरा मानव उसे मरते हुए देख कर भी अपने आप को अमर समझता है। आप जी ने वाणी में बार-बार मौत का जिक्र करते हुए मानवीय मन को मौत के भय से मुक्त कर निडर बनने के लिए प्रेरित किया है। इन पदों में निराशा भाव नहीं बल्कि मानव को आशावादी बनने का संदेश दिया है।

गुरु साहिब की वाणी पढ़ने से पता चलता है कि सारी वाणी त्यागमयी नहीं वैरागमयी है। वैराग का मतलब संसार को त्यागना या गृहस्थ जीवन की जिम्मेवारियों से भागना नहीं। वैराग पक्ष से देखा जाए तो आप की वाणी सभी गुरु काव्य में विशेष स्थान रखती है। आप की वाणी रहस्यवाद से दूर और धार्मिक शिक्षा के साथ भरपूर है। गुरु जी ने सिर्फ उन रसों को छोड़ने का संदेश दिया है जो सदैव नहीं हैं। आप वैराग से ही अनुराग का मार्ग दिखाते हुए कहते हैं कि–''इह चिंता उपजी घट महि जब गुर चरनन अनुरागिओ।।''[5] जब मानव का गुरु चरणों के साथ प्रेम पड़ जाता है तो उस के हृदय में विचार आता है कि परमात्मा के स्मरण से बिना जीवन व्यर्थ बीतता जा रहा है।

गुरु जी की वाणी में समान ध्वनि वाले शब्दों का चयन ऐसा है कि पाठ करने पर लय का संचार हो जाता है और पाठक लय के साथ-साथ एक सुर हो जाता है। बनावट पक्ष से वाणी में 'रहाउ' वाला पद शबद में एक है और आरंभ में आता है। ''शबद कीर्तन के अन्तर्गत वाणी अथवा रचना का प्रस्तुतीकरण निर्धारित रागों, राग प्रकारों, गायन शैलियों, सांगीतिक संकेतों तथा रहाउ व अंक इत्यादि निर्देशों के अनुशासन के अधीन ही किया जाता है।''[6] 'जल ते बुदबुदा', 'सुपना रैनाई', 'बादर की

छाई' और 'बारु की भीत' आदि प्रमाण द्वारा प्राणी मात्र को सत्य का ज्ञान करवाया है। आप ने भाई, साधो, प्रीतम, मीत, माई, प्राणी, नर शब्दों के द्वारा जीव को संबोधित किया है।

गुरु तेग बहादुर जी की वाणी 17 रागों में दुपदे और तिपदे के रूप में गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। संख्या में यह शबद 59 और शलोक 57 अर्थात कुल 116 पद हैं। कई विद्वान रागों की संख्या 15 या 16 मानते हैं। परन्तु गुरु ग्रंथ साहिब में मुख्य रागों के साथ-साथ उपराग भी शामिल हैं। इस प्रकार राग तिलंग काफी और तिलंग, राग बसंत हिंडोल और बसंत अलग राग मानने से रागों की संख्या 17 हो जाती है। यह संपूर्ण वाणी गुरु गोबिन्द सिंह जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ में दमदमा साहिब (साबो की तलवंडी) के स्थान पर सन् 1706 में दर्ज की।'' इस के अलावा गुरु ग्रंथ साहिब के अंत में 57 'शलोक' ('सलोक वारां ते वधीक' के सिरलेख अधीन) शलोक महला 9 के रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंग 1426 से 1429 तक अंकित हैं। यह शलोक' भोग के शलोक के रूप में पढ़े और सुने जाते हैं।'[7] इन शलोकों के विषय मुख्य तौर पर पदों या शबदों वाले ही हैं। इन शलोकों में से चार शलोक ऐसे हैं जो वाणी से विलक्षण और न्यारे हैं। जो इस प्रकार हैं–

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन।।
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखनि।।16।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ.1426)

चिंता त की कीजीऐ जो अनहोनी होए।।
इहु मारगु संसार को नानक थिरू नहीं कोए।।51।।
बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाए।।
कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाए।।53।।
बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाए।।
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाए।।54।।''

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ.1429)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में रागों की तरतीब में आते अंतिम राग जैजावंती को केवल गुरु तेग बहादर ने अपनी रचना के लिए प्रयोग किया है। रागों में आप की वाणी का विवरण इस प्रकार है–

संख्या	राग	पद या शबद
1	गउड़ी	9
2	आसा	1
3	देवगंधारी	3
4	बिहागड़ा	1
5	सोरठि	12
6	जैतसरी	3
7	धनासरी	4
8	टोड़ी	1
9	तिलंग काफी	1
10	तिलंग	2
11	बिलावल	3
12	रामकली	3
13	मारू	3
14	बसंत हिंडोल	1
15	बसंत	4
16	सारंग	4
17	जैजावंती	4
		59

गुरु तेग बहादर जी द्वारा प्रयोग किए रागों की ओर ध्यान देने से एक बात उभर कर सामने आती है कि उनके सब से ज्यादा शबद राग गउड़ी (9 शबद) और राग सोरठि (12 शबद) में मिलते हैं। आप ने लगभग सभी शबद और शलोक मन को संबोधन करते हुए उच्चारण किए हैं। आप द्वारा वाणी के लिए प्रयोग किए रागों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–

राग गउड़ी में उच्चारण किए शबदों की संख्या 9 है। इस राग में ''साधो मन का मानु तिआगउ।। साधो रचना राम बनाई।। साधो इहु मनु गहिओ न जाई।। साधो गोबिंद के गुन गावउ।। साधो राम सरनि बिसरामा।।''[8] आदि शबदों में बार-बार साध को संबोधन कर अंत समझाने का प्रयत्न किया है कि परमात्मा की शरण पड़ कर ही विकारों से बचा जा सकता है।

राग आसा में ''बिरथा कहउ कउन सिउ मन की।।''[9] एक शबद मिलता है। इस शबद में मन की हालत का जिक्र करते हुए बताया गया है कि लोभ में फँसा हुआ मन धन जोड़ने की तृष्णा के कारण दस दिशायों में दौड़ता है परन्तु परमात्मा के स्मरण से 'कुमति बिनासै' (खोटी मति) दूर हो जाती है।

राग देवगंधारी में तीन शबद मिलते हैं। ''यह मनु नैक न कहिओ करै।। जगत मै झूठी देखी प्रीति।।''[10] मेरा मन बिल्कुल ही मेरी बात नहीं मानता परन्तु दुनिया का प्यार झूठा है।

राग बिहागड़ा में ''हरि की गत नहि कोऊ जानै।।''[11] एक शबद मिलता है। कोई मानव यह नहीं जान सकता कि परमात्मा कैसा है। मोह माया की सभी इच्छाएँ त्याग कर ही मन परमात्मा के चरणों में जोड़ा जा सकता है।

राग सोरठि में सब से अधिक 12 शबद मिलते हैं। इस राग में मन को संबोधन करते हुए ''मन रे कउनु कुमति तै लीनी।।'' मन रे प्रभ की सरनि बिचारो।। ''माई मनु मेरो बसि नाहि।।''[12] आदि शबदों में गुरु साहिब परमात्मा के साथ प्रेम करने का संदेश दे रहे हैं कि ऐसा न हो कि ''मन की मन ही माहि रही।।'' अर्थात मन की आशा मन में न रह जाए क्योंकि मन गुरु की शिक्षा ग्रहण नहीं करता परन्तु जिस मानव पर गुरु ने कृपा की

उस को जीवन जीने की कला समझ आ गई। वह मानव 'जिउ पानी संगि पानी' परमात्मा में इस तरह लीन हो जाता है, जैसे पानी के साथ पानी मिल जाता है।

राग धनासरी में चार शबद मिलते हैं। ''काहे रे बन खोजन जाई।। पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई।।''[13] हे! जीव तू परमात्मा को जंगलों में क्यों ढूँढने जाता है? जैसे फूल में सुगंध और शीशा देखने वाले का शीशे में अपना अक्स नजर आता है, वैसे ही ईश्वर सब में निवास करता है।

राग जैतसरी में तीन शबद मिलते हैं। ''भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ।।''(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 702)

भूला हुआ मन माया के मोह में फँसा रहता है। हे! मेरे मन यह अटल विचार अपने अंदर बसा ले कि परमात्मा के नाम के बिना बाकी सारा संसार नश्वर है।

राग टोड़ी में ''कहउ कहा अपनी अधमाई।।'' (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 718) एक शबद मिलता है। मैं अपनी नीचता कितनी बयान करूँ? मैंने कभी ईश्वर की अराधना नहीं की और मेरा मन धन पदार्थ और स्त्री के मोहजाल में फँसा रहता है। गुरु की शरण पड़ने से ही समझ आती है कि प्रभु भक्ति के बिना ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती।

राग तिलंग काफी में (एक शब्द) और तिलंग में (दो शब्द) मिलते हैं। गुरु जी कहते हैं कि यदि परमात्मा का नाम सुमिरना है तो दिन रात एक कर सुमिरना शुरू कर ''जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ।।''[14] हे! मानव सुचेत हो तू क्यों माया के मोह के कारण बे-परवाह हो कर सो रहा है। मेरी बात मान ले उम्र का समय गुजरता जा रहा है।

राग बिलावल में गुरु जी ने तीन शबद उच्चारण किए हैं। ''दुख हरता हरि नामु पछानो।।''[15] नाम सभी दुखों का नाश करने वाला है। आप अजामल, गज, धरू की उदाहरण देकर उत्साह बढ़ाते हुए जीवन मुक्ति का मार्ग बताते हैं।

राग रामकली में तीन शबद मिलते हैं। ''नानक बिरदु राम का देखहु अभै दानु तिह दीना।।''(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ.901-02)

परमात्मा के नाम का सहारा लेने से जिज्ञासु जीव अभयदान (आत्मिक अवस्था) प्राप्त कर लेता है जहाँ जीव को कोई विकार छू नहीं सकता और जीवन में भाग-दौड़ खत्म हो जाती है ।

राग मारू में तीन शब्द मिलते हैं। आप अजामल और गनिका का जिक्र करते कहते हैं ''जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई।।''[16] परमात्मा की अराधना करने से जन्म सफल हो जाता है।

राग बसंत हिंडोल में (एक शब्द) और बसंत में (चार शब्द) मिलते हैं। ''माई मै धनु पाइओ हरि नामु।।''[17] जब गुरु की शरण पाकर नामधन प्राप्त हो जाता है तो मन माया की खातिर भाग-दौड़ करने से बच जाता है और मन नामधन में ठिकाना बना कर बैठ जाता है।

राग सारंग में चार शबद मिलते हैं। ''हरि बिन तेरो को न सहाई।।''[18] परमात्मा के बिना मानव की कोई भी सहायता करने वाला नहीं है। परन्तु यह सोचकर हैरानी होती है कि मानव व्यर्थ में अपना जीवन बर्बाद कर रहा है। वही मानव मोह के बंधनों से मुक्त रहता है जो परमात्मा के भजन में अपना मन जोड़ता है।

राग जैजावंती में चार शबद मिलते हैं। ''रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है।।''[19] हे! मानव परमात्मा का नाम सुमिरन कर जो तेरे काम आने वाला है। गुरु जी बार-बार यह बात ही कहते हैं कि सभ्य जीवन जीओ।

यह देखना जरूरी बन जाता है कि गुरु जी ने अपनी रचना के लिए राग जैजावंती विशेष कर क्यों प्रयोग किया? राग जैजावंती राजस्थान का माना जाता है और योद्धाओं को उत्साहित करने के लिए गाया जाने वाला राग है। ''जब कोई योद्धा जंग जीत कर वापस आता था तो ऊँचे सुर में राग जैजावंती में उस की उपमा का गान किया जाता था। माना जाता है कि जय जय की माला भी उस के गले में डाली जाती थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पहला राग श्री है जो शाम का राग है और अन्तिम से पहला प्रभाती।''[20] जब गुरु साहिब धरती पर आए तो अज्ञानता के अंधेरे से गुणों की शाम पड़ी हुई थी। यदि जीव गुरुवाणी द्वारा दिखाए मार्ग पर चल पड़े तो उस के जीवन में गुणों की प्रभात हो जाएगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 1171
2. गुरनाम सिंह, सिख म्यूजिकोलॉजी, पृ. 2
3. डॉ. गीता पैंन्तल, पंजाब की संगीत परम्परा, पृ. 110
4. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 219
5. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 1008
6. अशोक कुमार यमन, संगीत रत्नावली, पृ. 716-17
7. तारन सिंह, गुरु तेग बहादर जीवन ते सिखिया, पृ. 58
8. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 219
9. वही, पृ. 411
10. वही, पृ. 536
11. वही, पृ. 537
12. वही, पृ. 632
13. वही, पृ. 684
14. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 726
15. वही, पृ. 830
16. वही, पृ. 1008
17. वही, पृ. 1186
18. वही, पृ. 1231
19. वही, पृ. 1352
20. सतिबीर सिंह, इति जिनि करी (जीवनी गुरु तेग बहादुर जी), पृ. 180